सम्पादक की कलम से

शिक्षा का दूरगामी लक्ष्य बनाओ

यह सबको मालूम ही है कि हमारे पूर्वजों को विशिष्ट वर्ग ने शिक्षित होकर सक्षम बनने से रोकने के लिये अनेक पाखण्ड स्थापित किये थे। हमारे कठोर परिश्रम एवं बौद्धिक क्षमता को भांप कर निरीह दास की भाँति बनाये रखने के हर हथकण्डों का प्रयोग का प्रयोग किया था, जिसमें वे सफल भी रहे थे। हमारी गाढ़ी कमाई को बच्चों को शिक्षित करने से वंचित रखने हेतु उन्होनें नदी, नालों, पहाडों, पत्थरों, वृक्षों, स्नान दान धर्म के मकड–जाल में फंसा रखा था । वे अपनी अयोग्य संतानों की सुख–सुविधा शिक्षा संस्कार और धनी बनाये रखने हेतु चिन्तिन रहकर इसी उधेड़ बुन में लीन होकर ''अंह बृह्यस्मी'' का परिवेश बनाये रखने हेतु साहित्य की रचना कर प्रकाण्ड बने रहने की होड़ आपस में ही लगाये रखते थे, और किसी भी मान –सम्मान पुरस्कार प्रतिभा के प्रथम दावेदार बने रहने के लिए शासकों की चादुकारिता करते हुए सिद्ध हस्त बने रहते रहे थे । किन्तु लगभग आबादी के 85 प्रतिशत् नागरिकों को परिश्रम करनें । सेवा दान–पुण्य करने, तीर्थटन करने, अपना स्वार्थ सिद्ध करने हेतु शिक्षित होने से रोकने के तमाम हथकण्डों का इस्तेमाल करते थे। और हमारी अशिक्षित नीरिह जनता इसी भाग्य को कोसने व मरने के बाद स्वर्ग तर्क के सपने समझ कर आचरण करने में लीन रहते थे।

भला हो उस निर्भिक (परमात्मा) का जिसमें इन शोषित पीड़ीत बहुजनों की दिन–हीन दशा को सुधारने के लिए सत्रहवीं सदी में उत्थान की दिशा दिखाकर पढ़ने –लिखने का मार्ग प्रशस्त किया । मानव मात्र की समान भाव से उन्नति करने का अधिकार देकर आवश्यक व्यवस्था विद्यालय, महाविद्यालय, चिकित्सालय, आवागमन के साधन खान–पान पहनाव की समानता के अवसर पैदा किये। आर्थिक रूप से सक्ष्म बनने का अवसर भी दिया । परिणाम स्वरूप इन बहुजनों की जीवन दशा सुधरने लगी।

इसी परिपेक्ष में महात्मा बुद्ध की वाणी एवं शिक्षा का जो सौपान ईसा पूर्व खोला था । जो सम्राट अशोक तक स्वर्णिम युग बना बाद में शासन परिवर्तन के परिवेश में फिर आगे बढ़ने के समान अवसर अवरूद्ध होने लगे और मुगलकाल तक यही सब चलता रहा फिर अंग्रेजी राज में अवसर समानता के द्वार खुलते गये।

सामाजिक शैक्षणिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले ;1827.1890द्ध ने मानवता को समस्त समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु कठोर संघर्ष किया, पहली बार नारी शिक्षा का सौपान अपनी पत्नि सावित्रीबाई फुले को शिक्षित–प्रशिक्षित कर प्रथम शिक्षिका बनाकर नारी उद्धार का रास्ता खोल दिया, तमाम दकियानूसी एकाधिपथ्य वादियों की चाल असफल होती गई और फुले आन्दोलन ने भारत ही नहीं विश्व को नया चमकता हुआ। सूरज की तरंगे सबको पाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया । फुले दम्पत्ति का सम्पूर्ण जीवन व आदर्श वैज्ञानिक आधारों पर खरा उतारने वाले हैं, उनको कोई भी महाविद्वान–झुठला नहीं सकता हैं। चुनौति देकर कोर्ट–कचहरी तक फुले आदर्शो को रोकने के तमाम प्रयास विफल होते गये । मानव समाज को संगठित होकर अपने मौलिक अधिकारों को पाने हेतु फुलों का साहित्य सदा सुलभ रहा । आज भी जो सड़ी–गली व्यवस्था बची है, एक न एक दिन जब परीक्षण से गुजरेगी बदलाव आयेगा। मानव समान अवसर पाकर शिक्षित होकर अपना –अपनी पीढ़ियों का उत्थान जरूर कर सकेगा।

हाँ फुले आदर्शों के अनुरूप बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर ने भारत के आदर्श संविधान में मानव मात्र को रहने, खाने,पहनने, घुमने–फिरने, बोलने पढ़ने–लिखने, स्वस्थ्य रहने, उन्नति करने के समान अवसर एवं अधिकार मौलिक रूप से प्रदान कर दिये है। अब कोई किसी को अश्यप्रश्य नहीं मान सकता दबे–कुचले सैंकड़ों वर्षों से असामनता का दश झेल रहे, ऐसे मानव समाज–वर्ग वर्ण जाति को संविधान की धारा– 340ए341 एवं 342 में जब तक सभी को जीने का समान अवसर नहीं मिले, शिक्षा पाने, पदन्नोति पाने, जनप्रतिधित्व करने, नारी उत्थान एवं समानता से अधिकार संवत बनाये जाने तक आरक्षण की व्यवस्था तक कर दी है। उत्थान एवं समानता से जीने के अधिकार बनाये जब तक आरक्षण की व्यवस्था तक कर दो है।

यह तो विडम्बना है कि सरकारों को चलाने वाले सक्षम लोग एकजूट होकर संविधान में प्रदत्त समान अवसरों की पूर्ति करने के लिए आड़े आ रहे, और मानव को समान अवसरों से वंचित रखने हेत तमाम उपाय आजमाते जा रहे है।

आश्चर्य है कि सरकारें पशु पक्षी, घर–मकान की जनगणना कर रही है, किन्तु ओबीसी की जनगणना अंग्रेजी राज 1931 में होने के बाद आजादी 1947 से मिलाने के बाद अब 70 वर्षों तक भी करने हेतु तैयार नहीं हैं। और कठोर संघर्षों के बाद आधी–अधूरी जनगणना ओबीसी जातियों की जो कारवाई उसका नोटिफिकेशन आम जनता के लिए नहीं किया । इसका क्या कारण है, सभी समझते हैं किन्तु चापलूसी करने वाले ओबीसी के जानकर लोग जन प्रतिनिधित्व करने वाले नेता गण सरकार पर दबाव नहीं बनाते है। यही अफसोस है।

शिक्षा को दूरगामी लक्ष्य बनाकर ''शिक्षानीति'' सरकारों को निहित स्वार्थ छोड़कर निष्पक्षता से बनाना संविधान की भावना है। इसे हर हाल में प्रत्येक नागरिक को निशुल्क सुशिक्षित करने हेतु बजट प्रावधान करना उनका दायित्व एवं फर्ज है।

अभिभावक भी जब अपनी समझ बने अपनी संतानों को दूरगामी लक्ष्य बनाकर शिक्षित–प्रशिक्षित करने हेतु अपने दायित्व को पूरा करे, तॉकि हमारा राष्ट्र विश्व में आदर्श बन सके ।

रामनारायण चौहान

क्या आप जानना चाहोगे?

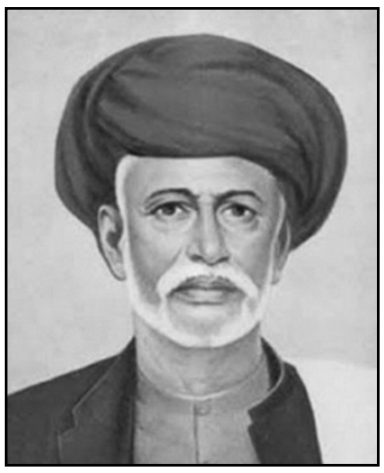

सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुलों ने समतामय मानव समाज की रचना करने उनकी जाति, पाती, धर्म, सम्प्रदाय का बन्धन तोड़कर इस प्रकृति की सभी देन के बिना भेदभाव के उपयोग करने शिक्षित होकर मानव जीवन के सभी लाभ लेने हेतु अधिकार सम्मत बनाया। हमारे देश की वर्षों से चली आ रही एक वर्ण की एकाधिकार तोड़कर समान रूप से आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर दिया ।

इस प्रकार अंग्रजों के शासन में नवशिक्षा का आरंभ हुआ, लेकिन आरंभ में ऊँची जातियों के लोगों का ध्यान नवशिक्षा की ओर नहीं गया। वे समझते थे कि सारा ज्ञान संस्कृत ग्रंथों में ही भरा हुआ है। उन्होंने इस बात को जानने की जरूरत महसूस नहीं की कि अंग्रेज कौन हैं, वे कहाँ से आये हैं। उनकी यही भ्रममूलक धारणा थी कि कलकत्ता विलायत में है और विलायत कलकत्ता में है। उनकी राय संस्कृत विद्या को छोड़ अन्य सभी विधाएँ और भाषाऐं नरकगामी थी। उनका विश्वास था कि बादल इंद्र के हाथी हैं और इंद्र के आदेश से ही वे वर्षा करते हैं। वे अपनी संकीर्ण सामाजिक परिस्थिति के दायरे से बाहर नहीं आये थे। सामाजिक तथा धार्मिक आज्ञा के आदी होने से वे शिक्षा लेने को घटिया कार्य समझते थे। पादरियों की खोली हुई पाठशाला में शिक्षा प्राप्त करने को तो वे हेय समझते थे। उन्हें इससे धर्मच्युत होने का डर था। इस प्रकार की स्थिति होने पर भी जोतीराव के पिता गोविंदराव ने उन्हें पाठशाला भेजा।

धीरे–धीरे यहाँ के लोग अंग्रेजी पढ़ने लगे तो उन्हें जैसे एक नई विशाल दृष्टि मिली। इससे वे धर्म, समाज, स्वतंत्रता आदि के बारे में इस नई दृष्टि से सोचने लगे। अंग्रेजी की पढ़ाई के कारण यहाँ के नवशिक्षितों को पश्चिमी देशों की सर्वांगीण प्रगति का ज्ञान हुआ। वे जान गयें कि जब तक हमारा समाज इस नयें जमाने में आधुनिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह प्रगति के पथ पर कदम नहीं बढ़ा सकता। इसलिए उनकी नजर में ज्ञानार्जन ही सबसे महत्वपूर्ण कार्य बन गया। 'शिक्षा ही शक्ति है' ज्ञान ही सबसे बड़ा बल है' आदि जैसे वचन उनके घोष–वाक्य बन गये। वे समझते थे कि ज्ञान ही भौतिक उन्नयन की कुंजी है, उससे पुरानी भ्रममूलक धारणाएँ नष्ट हो जाएँगी तथा पुरानी प्रथाएँ धीरे–धीरे विलुप्त हो जायगी जिससे सामाजिक प्रगति का मार्ग खुल जायगा। उस समय की पत्र–पत्रिकाओं के इन नामों से ही इसका पता चलता है– ज्ञानचंद्रोदय, ज्ञानदर्पण, ज्ञानसंग्रह, ज्ञानदर्शन, ज्ञानविस्तार आदि। जो सार्वजनिक सभाएँ गठित की गई थीं, उनके भी नाम 'उपयुक्त ज्ञान–प्रसारक सभा', ज्ञान–प्रकाश सभा' आदि थे।

अंग्रेजी के आलावा, यहाँ के सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने वाली और दो शक्तियाँ थीं विज्ञान और ईसाई धर्म–विशेष कर ईसाई धर्म में व्याप्त मानवतावाद से यहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता अत्यंत प्रभावित हुए। अंग्रेजी शासन के कारण संचार के नये–नये साधन उपलब्ध हुए। डाक, तार से संदेशों का आदान–प्रदान होने लगा। सन् 1850 में रेलमार्ग बनाने का काम शुरू हुआ और 1853 में पहली रेलगाड़ी मुंबई से ठाणे तक लोहमार्ग पर दौड़ी। उसके बाद लगभग 15 वर्षो की अवधि में पाँच हजार मील लंबे रेलमार्ग बनाये गये। रेलमार्ग के साथ–साथ राजमार्ग बनाने का काम भी तेजी से शुरू हुआ। लॉर्ड डलहौजी ने 'पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट' का गठन कर उसकों सड़के, नहरें, सरकारी भवन, सेना के लिए निवास–स्थान आदि बनाने का काम सौंपा।

इन सभी सुविधाओं के कारण भारतीयों के जीवन में जैसे नई लहर दौड़ी। लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लग। जब पिछड़ी जातियों के लोग पढ़ने लगे, तो उन्हें ज्ञात होने लगा कि मिथ्या ग्रंथ–रचना करके, ईश्वर के नाम पर हमें ठगा जाता रहा है और हमारे विश्वास का अनुचित लाभ उठाया जाता रहा है। जब वे अपने धर्मग्रंथों का अध्ययन करने लगे, तो उनहें उन ग्रंथों का खोखलापन नजर आने लगा, क्योंकि उन ग्रंथों में कही गई बातें तर्क और विवेक की कसौटियों पर खरी नहीं उतरती थीं। तत्कालीन ब्राह्मणों ने अन्य जातियों के लोगों को शिक्षा दिलाने का यह सोंचकार खुला विरोध किया कि यदि अन्य जातियों के लोग अंग्रेजी सीखें तो हमारी परंपरागत और जन्मसिद्ध श्रेष्ठता खतरें में पड़ जाएगी और वे हर क्षेत्र में हमारी बराबरी करेंगे।

एक ओर पिछले ढाई हजार वर्षों से गुलाम बना हुआ समाज का जागृत होने लगा था, तो दूसरी ओर प्रयास किया जा रहा था कि उस समाज का जागृत होसे से पहले ही दमन किया जाए, शिक्ष के अंकुर फूटने से पहले ही उखाड़ें जाएँ या शिक्षा का बीज ही नष्ट कर दिया जाए। इन्हीं विचारधाराओं को लेकर आगे चलकर दो दल बन गये। एक दल मानता था कि जो पुराना है, वही सोना है और उसी को हमारे दैश में रखना चाहिए, हमारी ऊँची दिव्य, भव्य प्राचीन संस्कृति जीवित रहनी चाहिए, पुराने धार्मिक नियम बने रहने चाहिए, चार्तुवर्ण्य आगे भी चलता रहना चाहिए, ब्राह्मणों के सिवा अन्य लोगों को ग्रंथों को छूना भी नहीं चाहिए, तो दूसरे दल का अभिमत था कि पुरानी सारी प्रथाएँ बेकार हैं, उन्हें त्याग देना चाहिए, सभी को शिक्षा का अधिकार होना चाहिए, सभी को समान अधिकार मिलने चाहिए।

इन दो विचार प्रणालियों का टकराव तब से शुरू हुआ जो लंबे समय तक चलता रहा। आज भी यह कभी–कभी घिटपुट मात्रा में उभरता है। उस समय इन दो दलों में से पहले दल के नेता थे श्री विष्णुशास्त्री चिपलूणकर जिन्होंने खुद को 'मराठी भाषा के शिवाजी' घोषित किया था और जो अंग्रेजी भाषा को 'शेरनी का दूध' कहा करते थे, और दूसरे दल का सशक्त समर्थन करने वाले थे महात्मा जोतीराव फुले जिन्हे जन्म से नरव्याघ्र होने के कारण शेरनी के दूध की आवश्यकता नहीं थी और जिन्होंने आधुनिक युग को चुनौती देकर, अकेलेपन की पर्वाह न करते हुए परंपरागत मध्ययुगीन समाज–व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने न केवल विचार प्रस्तुत किये, बल्कि उन्हें कार्यान्वित करने के लिए साहस साथ कदम उठाये।

हम महात्मा जोतीराव फुले द्वारा अनेक कष्ट उठाकर जो मार्ग हमारे सुखमय जीवन के लिए दिखाया अंध विश्वास से बाहर निकलकर वैज्ञानिक के रास्ते पर चलाने हेतु ''पढ़ो–सुनो समझो आजमाओं–फिर अपनाओं के आधारों को आत्मसात करे। और स्वंय अधिकार सम्मान शिक्षित होकर दुसरों का भी उपकार कर सकते है।

रामनारायण चौहान

सामाजिक चिंतन (भाग-30)

अहम छोड़ एकजूटता के लिए आगे बढ़ो

वैसे बिना समिति संस्था संगठन, संघ, महासंघ के बिना कोई भी सार्वजनिक कार्य आगे नहीं बढ़ सकता है, और समाज के जागरूक लोग समाजसेवा के लिए कुछ न कुछ करना चाहते है, स्वंय सेवा धनसेवा मनसेवा की भावना प्रायः सभी में रहती है। परिवार का मुखिया भी अपने परिवार की उन्नति प्रगति के लिए अपनी क्षमता से योगदान करने हेतु तत्पर रहता है। चिन्तित रहता है, दुसरो से सहायता तक लेकर पहल जरूरी रखता है। इसी कारण समाज नई–नई ऊँचाइया छू रहे है।

यदि कोई व्यक्ति किसी समूह में शामिल नहीं हो पाते है, तो उसका एकागी जीवन बहुत ही कष्ट जनक बना रहता है और इस प्रकृति में अपने जन्म लिया है, तो मानव मात्र को दुसरों की सहायत लेना ही पड़ती है। चाहे परिवार हो, समाज हो, गौरव हो, शहर हो, प्रदेश हो, देश हो, विदेश हो, हर जगह व्यक्ति को बिना व्यक्ति के साथ हुए जीवन के घटनाकम आगे बढ़ ही नहीं सकते है

माता–पिता की सहायता के बिना जीवन की मझदार भी किनारे पर नहीं जा सकती है। माता का जीवन तो इतना उपकार भरा रहता है कि माता का ऋण कोई भी व्यक्ति कभी भी किसी प्रकार उतार ही नहीं सकता और पिता के कड़े परिश्रम के बिना परिवार का संचालन करना अत्यंत ही कठिन होता है। इसलिए प्रत्येक मानव को बिना दुसरे की सहायता सहयोग के जीवन की नदिनी जीवनी को आगे नहीं बढ़ा सकते है। एकांगी जीवन बिना लक्ष्यों का होता है, और ऐसा जीवन निरर्थक होता है।

जरा चिंतन करें कि पशु पक्षी भी एक दुसरे की सहायता के कुछ नहीं कर सकता है , ये प्राणी भी समूह बनाकर ही अपने जीवन की गतिविधियां आगे बढ़ाते है। प्रत्येक प्राणी के ग्रुप का एक मुखिया भी होता है, जैसे चिंटियाँ भी अपने ग्रुप लीडर की दिखाई चलाने वाली दिशा में ही आगे बढ़ती है। यदि पशु पक्षी जीव मात्र ग्रुप बनाकर अपना जीवन कर्तव्य पूरा करते है, तो मानव को तो इनकी सीख लेकर अपना समूह बनाकर अपना अपने–परिवार, अपने –समाज, अपने–गाँव, अपने शहर, अपने प्रदेश, अपने देश, अपने विश्व के लिये योगदान करने हेतु स्वेच्छा से सहयोगी बनाकर सामूहिक जीवन का आन्नद उठाना ही चाहिए और समूह के तो जीवन की नैया पार लगाना ही संभव नहीं है

हाँ कुछ व्यक्ति अपने –अपने परिवार से आगे निकालना ही नहीं चाहते, वे जो कुछ भी करते हैं, केवल परिवार में लिये ही करते है। इन्हीं में से कुछ जागरूक व्यक्ति समूह बनाने की पहल करता है, और जो पहल करता है, उसे दुसरे व्यक्ति का साथ भी मिलाने लगता और इसी प्रकार साथ–साथ आते हुए कारवा आगे बढ़ता रहता है।

ऐसे अब विचार कीजिए की समाज की एकजूटता उन्नति प्रगति के लिये अपना क्या योगदान हो सकता है। बस योगदान करने की और जो आगे बढ़ता है, वह एक समूह को खड़ा करने में योगदानी बन जाता है, इन्ही योगदानियों में से जिसका विजन दूरगामी चिंतन का होता है, उसका समूह चँहु और उन्नति जरूर करता है। योगदान सभी प्रकार का हो सकता है, तन–मन–धन अपनी–अपनी क्षमता से सहयोगी की भावना रखते है, वे समाज सेवी कहलाने के हकदार है

यह चिन्तन भी करना जरूरी है कि जो समूह–दुसरे–समूह– संस्था समिति संगठन, संघ, महासंघ, महासभा में काम करते है, उन्हें स्वार्थ भावना छोड़कर आगे सेवा की भावना से स्वरूचि से शामिल होते है वे मानव सेवा के लिए एक जूटता बनाने में सहयोगी हो सकते है। यह जरूरी है, कि स्वय महिला मण्डल होने के बजाय दुसरे सहयोगियों, साथियों का सम्मान बढ़ाने हेतु भावना से सेवा कटने वालों को सब सम्मान करते है, उनकी बातों को मानकर तन–मन–धन से सहयोग हेतु तत्परता दिखाते है इसी कारण अहम भाव को तिलांजलि देकर सबका मान–सम्मान का ध्यान देकर संस्था चलाने वाले अपने लक्ष्यों को पूरा कर सकते है। और एक दुसरे के साथ अपने उद्देश्यों की समानता वाली संस्थाओं को सभी मतभेद भुलाकर बड़ा दिल दिखाकर एकता स्थापित करने हेतु स्वंय को त्यागी बनाकर समाज के उत्थान के लिए आगे आये और सेवा भावी का परीचय देवे ।

आइये हम भी सभी मतभेद भुलाकर प्रत्येक समाज की एकजूटता बढ़ाने के लिए आगे बढ़े और समाज सेवी का कर्तव्य पूरा कर सकते है

रामनारायण चौहान

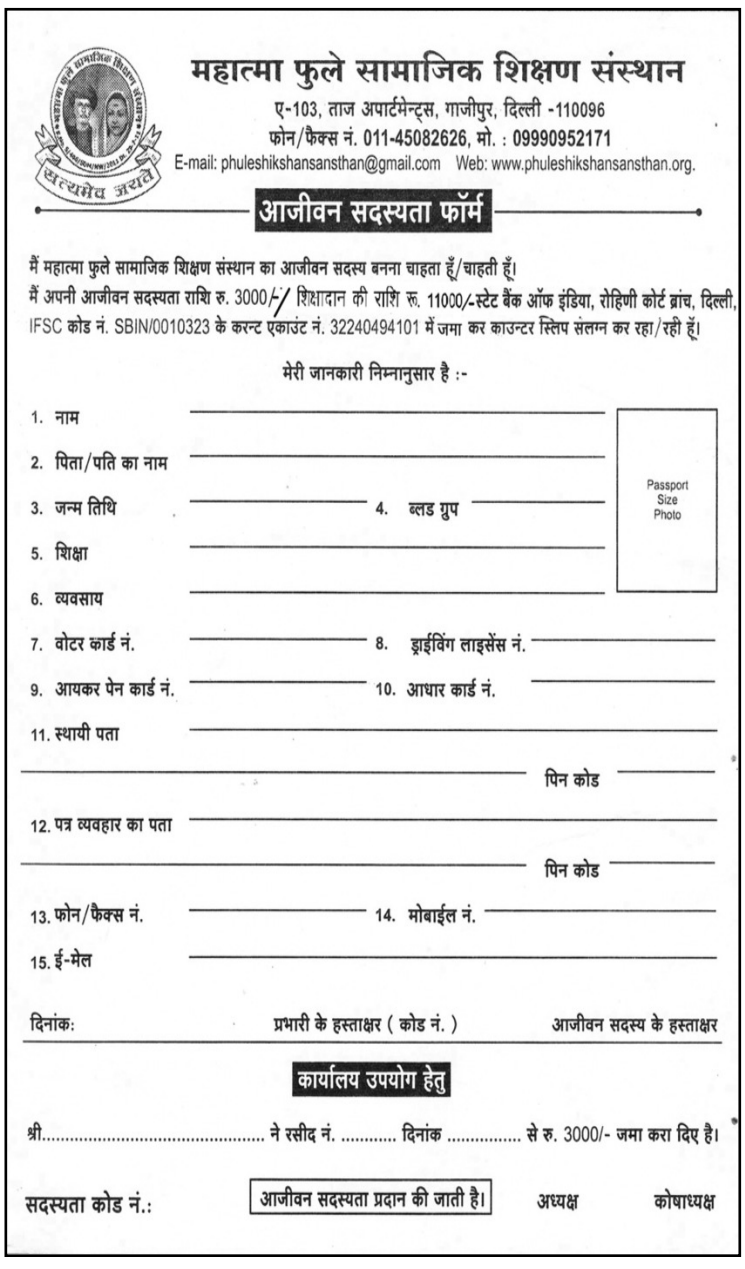

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096
फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171
E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।
मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रु. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम
2. पिता/पति का नाम
3. जन्म तिथि 4. ब्लड ग्रुप
5. शिक्षा
6. व्यवसाय
7. वोटर कार्ड नं. 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं.
9. आयकर पेन कार्ड नं. 10. आधार कार्ड नं.
11. स्थायी पता

पिन कोड

12. पत्र व्यवहार का पता

पिन कोड

13. फोन/फैक्स नं. 14. मोबाईल नं.
15. ई-मेल

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

आपसी बात

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - अक्टूबर से नवम्बर 2019

● महाराष्ट्र– शंकरराव लिंगे, जयद्वीप लिंगे (सोलापुर), शिवदास महाजन(पूणे), राजेन्द्र सैनी (मुम्बई), वनिता लोण्डे (ठाणे) महेश गणगणे (अकोला)।

● मध्य प्रदेश – जगदीश सैनी, टीकाराम पटेल (जबलपुर), राजा हारोड़, डॉ. प्रेमलता सैनी, आर.डी. माने, डॉ. छाया सैनी, मधु अम्बाड़कर, अविनाश फसाटे (भोपाल), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, गिरजाशंकर चौहान, विशाल चौहान, शिवनारायण गेहलोत, मोतीलाल चौहान, मुन्नासिंह कुशवाहा, सुरेन्द्र सांखला (उज्जैन), राजेश दौड़के (छिन्दवाड़ा), लोकेश वर्मा (महू) पुरूषोत्तम अनुरागी (सतना),. ,एड. पी.सी. हारोड़, राजेश माली (पत्रकार) विनोद मकवाना (बड़नगर), काशीनाथ महाजन (बुराहनपुर), सत्यनारायण चौहान (इन्दौर), गोर्वधन पटेल (जावरा), नारायण यादव (हरसोला), रामदयाल भाटी (श्योपुर)

● हरियाणा– राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा), गणेश हारोड़ (गुड़गाँव)

● दिल्ली– चौ.इन्दराजसिंह सैनी, कमलेश सैनी, रमेश कुमार सैनी, सुमन सैनी, एम.पी.सिंह सैनी, जी.एल. सैनी, पवन सैनी, सुरेश सैनी, इन्जी. महावीर सैनी,

● गुजरात / गंगाराम गेहलोत, कमल गेहलोत (अहमदाबाद), ।

● बिहार–, मदन मोहन भक्त (भोजपुर), संजय मालाकार (पटना) ।

● छत्तीसगढ़– हरीश पटेल (बालोद), ।

● पंजाब– हरजित सिंह लोंगिया (रोपड़)

● कर्नाटक – एन.एल. नरेन्द्र बाबू ,शिओम माली (बैंगलोर), भीमाशंकर मालागार

● उत्तरप्रदेश– इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी, (मेरठ),रविन्द्र कुमार सैनी, (कन्नौज), राजानारायण श्री माली (प्रतापगढ़)।

● जम्मू एण्ड काश्मीर– ओंकारसिंह सैनी (सांबा)

● राजस्थान– रामनारायण सोलंकी (जोधपुर),।

6 दिसम्बर संविधान निर्माता बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर का परिनिर्वाण दिवस

योग्य कार्य करने के लिये सही सोच की आवष्यकता होती है और सोच तभी विकासीत होती है जब हम अपने किये जाने वाले कार्य के बारे मे पुरी जानकारी रखते है।

''हमारी समस्या का समाधान सिर्फ हमारे पास है।
दुसरों के पास तो सुझाव होते है।
महात्मा बुद्ध

''मेरा पक्का विश्वास है कि संसार कि कोई भी किताब किसी ईश्वर या किसी देवता न नहीं लिखी।

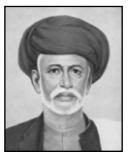

महात्मा फुले

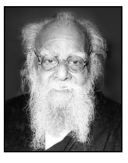

''जिन्दा हो तो अपने अधिकारों के लिए लड़ना सीखों वरना मुर्दे भी कब्र में पड़े-पड़े सड़ा करते है।''
परेयिार इ.वी. रामा सामी

THE STUFE LEGENDS ARE MADE OF CYNTHIA STEPHEN

The significance of these events is hard to imagine in the 21st century. But these were the first instances, probably in centuries, when a Hindu wedding was conducted without the mediation of a Brahman and without a barman priest officiating at the ceremony. It was probably the first time that the law was pressed into the defence of such a matrimonial ceremony, in effect making it one of the first civil weddings between Indians in the country.

In the 1870s, the Phules were actively in volved in famine relief. They were instrument in starting 52 boarding School for the welfare of the children orphaned in the famines.

Mahatma Phule passed away on November 28, 1890. Evenat the funeral, Savitribai Showed her gritty character. Her adopted son, Yaswant, raised an objection to phule's cousin carrying out the last rites, as this duty devolved on the heir to the property. Hence she stepped forward to light the pyre! This perhaps, was one of the very rare instances in the history of India, where the wife lit the funeral pyre of the husband .

Savitri bai took over the Satayshodak Samaj after the death of her husband. She presided over the meeting of the Samaj in 1893 in Saswad. In the famineof 1896, Savitribai again worked tirelessly, and Susccessfully lobbied the government to undertake relief measures. In 1897, anepidemic Swept pune. Savitribai was engaged personally in the relief effort during this tragedy as well. This time, shewas afflicted by plague, anddied on March 10,1897. Her son yashwant officiated at her funeral.

The life that inspires

Savitribai was a major figure of her time. An able and committed companion to her husband, she was a revolutionary leader in her own right. Despite tremendous odds, she rose to become a productive, inspiring and capableteacher, leader, thinker and writer.

She was probably one of the first published women in modern India, and was able to develop her own voice and agency at a time when women of all classes were still treated as less than human, with little to hope for,except to be married as children themselves, bear more children, and live a life of servitube to their husband, and after he died, to other male relatives.

The fact that the phule couple exercised the still highly unusual option of a Brahman widow and raising him as their own son, show their rare intergrity of principle and practice -at one stroke challenging several notions of purity, descent, morality. In so doing, they also elevated the man-woman relationship to one of equality and mutual respect.

Her act, of choosing to light her husband's funeral pyer, which would still be considered audacious, must have sent shock waves across the land! This one act speaks volumes of her self-confidence and independence, proving that she was not a conventional Indian Pativrata (devoted wife) following in her husband's footsteps. Such facts have been kept hidden from public knowledge, whereas the Brahman male reformists' highly ambiguous and half-hearted efforts for women's upliftment continue to be hailed as the most glorious cha[ter of the 19th century India.

The truly liberating moments for Indian women happened in and through the life of savitribai, who chose to walk, in step with her husband, ahead of her time by centritiries The historic disadvantage of caste, class and gender faild tokeep her down in the 19yh century.

●●●

A TEACHER AND A LEADER

GAIL OMVEDT

The year was 1851,the occasion: the opening of the first school for girls- all castes- in pune. A young woman, veil over her head, is hurrying to teach. From nearby, the orthodox Brahman women curse:

What is the doing, why is this happening? This an insult to our religion!

And they throw dung at her.

Undaunted, Savitribai, wife of jotiba, hurries on. She has a greater aim in front of her. The giving of knowledge to those who have been deprived for centuries and centuries, girls, especially low-caste girls. This is her aim in life now, encouraged by her husband, who has taken the unprecedented step of educating his wife so that she can in turn educate others – not only the family, but the community. For that she is redy to face anyrhig, including the taunts and harassment of the orthodox.

The incident has become famous though there are varying stories about it . In one version, most recently seen on the internet, is a group of men who followed her occasionally even throwing stones. According to this account, savitribai was finally advised by her husband to wear her old sari while walking to the school, change into a new one before taking classes, and change into the old one while returning home.

Savitribai was born in a farming family in Naigaon, western Maharashtra, in 1831, and married to Jotirao, as was the custom then, as a young girl only nine years old was the custom then, as a young girl only nine years Old. She became his constant companion througther they left the joint household and began aseparate life of struggle together. The mangalashtaka or wedding song that jotirao wrote must have been inspired by her:

Groom: Maintain the customs of your family according to the laws of god,

Truth is supereme over all, Honour it;

Teach all the ignorant equllay, give them knowledge:

I take you in marriage with love seeing all your deeds Shubhanala Savashan.

Bride: Even Though You give Respect daily, and your conduct is satisfactory, All us women are exploited, how will you take me?

We khow the experience of freedom and have become self-respecting,

For that will you give rights to women ? Take an oath shubhamangala savadhan.

Groom: I will fight to win these right for all women without counting the cost

I honour all women as Sisters and you as the only love

For fear of my duty I will take care of you:

shubhamangala savadhan.

Bride: With brotherhood all around, I take you as my husband,

I will never break my vow to you and always do my duty,

Laying aside all burdens let us struggle for the welfare of the people,

Holding your hand Ivow, before all now,

shubhamangala savadhan.

The blessing of the guardins:

Honour Always gratitude to your mother and father,

And keep love for your friends,

Give support to the old, the crippled and children, teach them knowledge,

Joyfully throw flowers everywhere and now clap your hands,

shubhamangala savadhan.

And so she worked with jotirao when he started a sesies of five school in 1849, with the school for girls as the climax, and went for training with the school for girls as the climax, and went for training with a young Muslim woman, Fatima Sheikh. The girls in the school belonged to different castes, and one essay by a young dalit (Matanga caste) girl remain famains famous. In it, inspired by what she had learned, she wrote about the benefits of education that British rule had made possible:

Formerly, we were buried alive in the foundations of building….we were not allowed to read and write…

God has bestowed on us the rule of the British and our grievances are redressed. Nobody harasses us now. Nobody hang us. Nobody buries alive. Our progeny can live now. We can wear clothes, canwear clothes, canput cloth around our body. Everybody is at liberly to live according to his means. No bars, no tanoos no restriction. Even the bazaar at the Gultekadi is Open to us.

In 1852, Savitribai and Jotirao were both, felicitated by the government for their work in education.

She took part boldly in all the social revolutionary activites, throwing open her own well to untouchalbles in 1863, serving as the president of the Satyashodhak samaj and carrying on its work even after husband's death, helping in the home for orphans of widows founed by Jotiba and with him yash adopting a baby, son of a Brahman widow, naming him Yashwant and bringing him up as her own son.

When she died it was in social service . she was helping the victims of plague in the mid 1890s, when she organized camp for poor children. It is said that she used to feed two thousand children every day during the epidemic. By a stange irony, she herself was struck by the disease while nursing a sick child and died on 10 march 1897.

It is not surprising, then that she has become known as Krantiyoti- Savitribai phule, the lamp of revolution.

Cont. Next Month

देश भर के समाचार

संकलन
रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

● जयपुर (राज.)– अखिल भारतीय माली सैनी सेवा सदन संस्थान पुरस्कार पुस्तक का श्री अशोक गेहलोत मुख्यमंत्री द्वारा विमोचन किया। इस प्रकार अवसर पर ऊंकारमल कच्छावा, छुट्टनलाल सैनी, मोतीबाबा फुले, ताराचन्द गेहलोत, भवानी शंकर माली सहित पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

● दिल्ली– सावित्रीबा ज्योतिराव फुले ट्रस्ट मंगोलपुरी में 1दिसम्बर को समाज की विभिन्न शाखाओं के संयुक्त तत्वाधान में शिखर सम्मेलन आयोजित किया। जिसमें सामाजिक शैक्षणिक, आर्थिक, राजनैतिक विषयों पर विचार कर एकता स्थापित करने पर विचार किया जायेगा। उक्त जानकारी पवन सैनी, नरेश सैनी ने दी।

● नागपूर (महा.)– अखिल भारतीय माली महासंघ द्वारा 17 नवम्बर करो शुभमंगल स्मारिका एवं युवक–युवति परिचय सम्मेलन हुआ। उक्त जानकारी गोविन्द वैराले एवं कैलाश जामगड़े ने दी।

● दिल्ली– कुशवाह समाज द्वारा 16 फरवरी को युवक–युवति परिचय सम्मेलन एवं स्मारिका का प्रकाशन होगा ।

● गाजियाबाद (उप्र.)– 29 दिसम्बर को महाराजा सूरसैनी जयंति पर सम्मेलन होगा। उक्त जानकारी प्रदीप सैनी ने दी।

● मुम्बई (महा.)–5 जनवरी को 12वाँ वधु– वर सम्मेलन व पारिवारिक मिलान सम्मेलन होगा। उक्त जानकारी वसंतराव उमाले, योगेश इंगले, अजय वघारे ने दी।

● दिल्ली– सावित्रीबा ज्योतिराव फुले ट्रस्ट प्रांगण में आमसभा की अध्यक्षता कृष्ण कुमार सैनी ने करते हुए भवन बनाने की रूप रेखा पर विचार किया, ट्रस्टियों ने सुझाव दिये। समाज की एकजूटता पर जोर दिया गया। उक्तजानकारी महावीरसिंह सैनी ने दी।

● रायबरेली (उप्र.)– आ.भा. श्रीमाली महासभा के जिला अध्यक्ष शिवकुमार श्रीमाली को क्षेत्रिय अध्यक्ष बनाया। बधाई।

● जयपुर (राज.)– महात्मा फुले शिक्षा समिति गुर्जर की थड़ी में समाज के 325 विद्याथियों को बैंक एवं अन्य राजकीय विभाग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अभी जक लगभग 500 विद्याथियों को रोजगार मिल चुका है।

● डीडवाना (राज.)– गोरधन लाल सैनी व्याख्याता ने अपनी सेवा निवृत्ति पर विद्यालय निमार्ण गांव विकास समाज के लिये बर्तन भण्डार आदि में रू. 15 लाख का अनुदान दिया। बधाई।

● फलटण (महा.)– महारष्ट्र माली समाज महासंघ द्वारा 29 दिसम्बर को महामित्र परिवार समाज के वधू–वर पालक परिचय सम्मेलन महाराजा मंगल कार्यालय में आयोजित । सम्पर्क दशरथ सदाशिव फुले 9823272523।

● डीडवाना (राज.)– 8 नवम्बर को समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित हुआ।

● मथुरा (उप्र.)– माली सैनी रक्षादल 8 नवम्बर को समाज के 21 जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्मेलन हुआ । श्यामसिंह सैनी का सम्मान किया। उक्त जानकारी डॉ. अशोक सैनी, रमेश सैनी ने दी ।

● इन्दौर (मप्र.)– श्री सकल पंच फूलमाली समाज द्वारा 20वाँ सामूहिक विवाह 8नवम्बर हुआ।

● सागर(मप्र.)– ऑल इंडिया सैनी माली सभा 5 नवम्बर को जगदीश सैनी, राष्ट्रीय अध्यक्ष के मुख्य अतिथ्यि में सम्मेलन हुई जिसमें समाज को शिक्षित करने, एवं एकता स्थापित करने पर विचार हुआ। कल्पना सैनी, बाल गोविन्द माली, दिलीप सैनी किरण, सुभाष सैनी शुभम सैनी ने विचार प्रकट किये।

● भनपुरा (म.प्र.)– महात्मा जोतीराव फुले परिनिर्वाण दिवस पर चार भुजानाथ माली मन्दिर पर जरूरत मन्दिर को कम्बल वितरित किये। राकेश माली सुनील माली आदि उपस्थित रहे।

● रतलाम (म.प्र.)– श्री लोकेन्द्रनाथ मारवाड़ी माली समाज समिति द्वारा 26 अप्रैल को आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित होगा। सम्पर्क शिवलाल भाटी 9827240332, भेरूलाल राठौड़ 8889079524 ।

● अमरापूरा (राज.)– संत शिरोमणि श्री लिखमीदास महाराज स्मारक विकास संस्थान द्वारा 1 दिसम्बर को समाज का राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह ।

● छिन्दवाड़ा (म.प्र.)–महात्मा फुले समिति संयोजक राजेश दौड़के ने बताया कि महात्मा फुले परिनिर्वाण दिवस पर विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

● सौसंर (म.प्र.)– महात्मा ज्योतिबा फुले विचार मंच द्वारा ओबीसी का जनमानस मनाया एवं समाज सेवियों को सम्मानित किया। विजय घाटोल, योगिराज वासनिक ने उक्त जानकारी दी ।

● बड़ोदरा (गुजरात)– कुशवाहा समाज सेवा समिति द्वारा 29 जनवरी को वार्षिक समारोह एवं पारिवारिक मिलन समारोह रामसिंह कुशवाहा हजूरीसिंह कुशवाहा, पाठक प्रसाद कुशवाहा, नागेन्द्र मौर्य ने उक्त जानकारी दी।

● जयपुर(राज.)– जयपुर जिला माली सैनी समाज संस्था द्वारा 1 दिसम्बर एवं 15 दिसम्बर को परीचय सम्मेलन सम्पर्क– कैलाशचन्द सैनी 9887156648 ।

● दिल्ली– पूर्वी दिल्ली सैनी सभा द्वारा 41 वाँ वार्षिक समारोह का नायबसिंह सैनी सासंद दिलबागसिंह सैनी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, राजकुमार सैनी राष्ट्रीय महासचिव ऑल इण्डिया सैनी समाज ने उद्घाटन किया। रामसिंह सैनी ने अध्यक्षता श्रीपाल सैनी, जयभगवान सैनी ने महात्मा फुले के आदर्शों को अपनाते एवं शिक्षा का महत्व बताया। जी.एल.सैनी, शिवराज सैनी, रमेश कुमार सैनी, राजकुमार सैनी, ने बताया कि इस अवसर पर वैवाहिकी परीचय स्मारिका का विमोचन एवं प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान किया । महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के महासचिव रामनारायण चौहान भी उपस्थित थे ।

● चुरू (राज.)– सैनी समाज कर्मचारी अधिकारी सेवा संस्थान द्वारा 29 दिसम्बर को प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान समारोह । सम्पर्क– चानणमल सैनी 9460671107 नारायण प्रसाद गौड़ 9784280647, विनोद पापटान 9875185686 ।

● मुम्बई (महा.)– विदर्भ माली संस्था द्वारा 5 जनवरी को मुलण्ड हाय स्कूल चादनाबाग रोड़ पांच रास्ता मुलुण्ड (प.) में मुम्बई नवी मुम्बई गणे व रायगढ़के समाज के उपवर–वधु वर मेलावा व कोटम्बिक स्नेह मिलन सम्मेलन। सम्पर्क वसंतराव उमाले 9920715367, लताताई खाड़े 8097436725।

● दिल्ली– अन्तराष्ट्रीय सैनी समाज मार्ग दर्शन एवं एकता संगठन के अध्यक्ष पवन सैनी, नरेश सैनी ने भाव मंगोलपुरी में आयोजित एकता शिविर में समाज को एकजूट करने का आव्हान किया ।

● रायपुर (छग.)– युवा माली समाज संगठन द्वारा 5 जनवरी को अखिल भारतीय युवक–यवति परिचय सम्मेलन एवं प्रदेश स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह महामाया देवी मन्दिर, संत्संग, भवन पुरानी बस्ती अमीन पारा में आयोजित। मुन्नालाल सैनी ललित सांखला अशोक माली नरसिंह गेहलोत, आनन्द माली, मीना सैनी कन्हैयालाल भगत, सुरेश पुजारी, हेमन्त सैनी ने उक्त जानकारी दी।

● जयपुर (राज.)– महात्मा फुले सर्किल स्थित महात्मा फुले की प्रतिमा के लिये सतकार भवन की 270 मीटर भूमि का आवंटन करने हेतु मुख्यमंत्री श्री अशोक गेहलोत का आभार प्रकट किया ।

महापुरुष पेरियार रामासामी नायकर (एशिया का सुकरात)

उन्नीसवीं शताब्दी में बहुजनों की बिगड़ी दशा को सुधारने हेतु कई महापुरुषों ने बहुजन समाज को नई दिशा दी जैसे महामना जोतीराव फूले प्रातः स्मरणीय भारत की प्रथम शिक्षिका माँ सावित्री बाई फूले, शाहू जी महाजराज, विरसा मुण्डा, नारायना गुरु, सन्त गाडगे, पेरियार रामासामी नायकर, बाबा साहब डा0 भीमराम अम्बेडकर, परन्तु इन सबमें पेरियार रामासवामी का संघर्ष एवं कार्य शैली इतनी व्यापक थी कि उसका अमिट प्रभाव दक्षिण भारत में तथा विशेषतः तमिलनाडु की राजनीति में आज भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने ज्योतिबा के दर्शन को दक्षिण भारत में फैलाया।

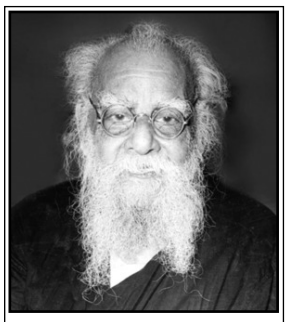

परिनिर्वाण दिवस
(24-दिसम्बर-1973)

पेरियार रामासवामी भी महामना फूले की भांति ब्राम्हण मित्र की शादी के कटु अनुभव से, सामाजिक उपेक्षा के दंश से प्रेरित हो जिस क्रान्ति ज्योति का – प्रारम्भ किया उसी क्रान्ति ज्योति को आगे बढ़ाने का कार्य पेरियार रामासामी ने वाराणसी में ब्राम्हणों द्वारा भोज में उन्हें भोजन न देकर उनकी सुप्त सामाजिक चेतना को जागृत किया था। दोनों ही महापुरुषों ने सामाजिक समता से कार्य प्रारम्भ किया परन्तु महामना फूले ने शिक्षा पर जोर अधिक दिया तो पेरियार रामासामी ने "द्रविण कजिगम" नामक राजीनीतिक पार्टी बनाकर कांग्रेस छोड़ दी एवं बहुजनों को यह समझाने में सफल रहे कि "समस्त शक्तियाँ राजनीति से ही प्राप्त की जा सकती हैं। आज तमिलनाडु में डी0एम0के0, ए0आई0डी0एम0के0, उसी द्रविण कजगम (डी0के0) के भाग हैं।

जहाँ एक तरफ महामना फूले ने 1885 में कांग्रेस की स्थापना के समय तमाम दबावों के बावजूद उसमें सदस्यता नहीं ग्रहण की परन्तु तब के तमिलनाडु (मद्रास प्रान्त) के मुख्यमंत्री सी0 राजगोपालाचार्य के प्रभाव से पेरियार साहब कांग्रेस में शामिल हुए तथा इरोड नगर पालिका के चेयरमैन बनेपरन्तु एस0सी0ध्एस0टी0 को आरक्षण न मिलने पर 1925 में कांग्रेस छोड़ दी।

महामना फूले ने महाराष्ट्र के पूना को अपना कर्याक्षेत्र बनाया तो पेरियार ने ईरोड से प्रारम्भ कर मद्रास शहर (चेन्नई) को अपना कार्यक्षेत्र बनायां दोनों ही ओ.बी.सी. वर्ग से क्रमशः माली एवं गड़रिया (भेड़–बकरी पालक) जाति से सम्बन्धित थे परन्तु दोनों के दिलों में एस0सी0ध्एस0टी0, स्त्री उत्थान की प्रबल आकांक्षा थी। महामना फूले ने विधवा पुनर्विवाह, विधवा कल्याण के लिए बहुत कार्य किया तो वहीं पेरियार रामासामी ने दूसरी शादी 69 वर्ष की आयु में 34 वर्ष की स्त्री से शादी की जिसकी समाज में बड़ी आलोचना भी हुई।

पेरियार रामासामी उत्तर भारतीयों, हिन्दी के प्रबल विरोधी थे उन्हें डर था कहीं तमिल संस्कृति नष्ट न हो जाय। यद्यपि महामना फूले ने "सत्य शोधक समाजश की स्थापना एवं "सार्वजनिक सत्यधर्मश पुस्तक लिखकर समस्त मानवता का योजनाबद्ध ढंग से कल्याण किया है उतना किसी अन्य का योगदान कम ही दिखाई पड़ता है। पेरियार रामासामी अधिक उग्र थे तभी तो उन्होंने हिन्दू देवी देवताओं का दहन कराया, अपमानित किया। वह नशा को बहुजन के पतन का मूल कारण मानते थे इसलिए उन्होंने अपने 500 ताड़ के पेड़ कटवा डाले। ताड़ी (नशीला द्रव) न पीने का आन्दोलन चलाया, तो वहीं महामना फूले ने तथागत बुद्ध की भाँति अविद्या को बहुजन दुर्दशा का मुख्य कारण बताया।

पेरियार रामासामी का परिनिर्वाण 24 दिसम्बर 1973 को हुआ अर्थात् लम्बा जीवन (94 वर्ष) उन्होंने बहुजन सुधार में लगाया उसके विपरीत महामना फूले का जीवन 63 वर्ष (1827–1890) का था उसमें भी अन्तिम दो वर्ष लकवा ग्रस्त (च्तंसलेमक) अवस्था में बीता फिर भी उनका कार्य बहुआयामी था उन्होंने शिक्षा, कृषि, नगर पालिका प्रबन्धन, जल प्रबन्धन, कृषक उन्नति, पाखण्ड, अन्धविश्वास उन्मूलन के लिए गुलामी, किसान का कोड़ा आदि पुस्तकें लिखीं"सत्यशोधक समाजश को नाटक मंचन कर गाँव–गाँव दहेज रहित, ब्राम्हण रहित शादी, विधवा विवाह की प्रथा को प्रेरित किया। दोनों ही समतावादी समाज के प्रणेता थे।

अन्त में कहना होगा कि आज भी तमिलनाडु की राजनीति का एक ध्रुव डी0एम0के0 गहराई से अपनी ऊर्जा पेरियार रामासामी से पाती है। पेरियार शब्द सम्मान सूचक, श्रद्धा का प्रतीक है जैसे महामना फूले को महात्मा की उपाधि बम्बई में दी गयी थी। गाँधी ने 1932 में पूना की यरवदा जेल में स्वीकारा था कि असली महात्मा तो जोतिराव फूले ही हैं। हम दोनों महापुरुषों को ष्भारत रत्नश से पुरस्कृत करने की माँग करते हैं।

एस0बी0 सैनी **(B.E.)**
पूर्व मण्डल अभियन्ता **BSNL**
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576